International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 272-274

पर्यावरण प्रदूषण हेतु आवश्यक सामाजिक दृष्टिकोण

दीपक कुमार

शोधछात्र (समाजशास्त्र), माधव कालेज, ग्वालियर, सम्बद्ध जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

पर्यावरण मानव जीवन का अभिन्न अंग है। वर्तमान युग में पर्यावरण का ह्रास एक जीवन्त समस्या है। पर्यावरण से आशय प्रकृति की व्यवस्था से है। वैज्ञानिक प्रगति ने मानव को इतना विमूढ़ बना दिया है कि उसने प्रकृति की व्यवस्था तथा प्राकृतिक नियमों में हस्ताक्षेप करना प्रारम्भ कर दिया है। आज हम अपने इन्हीं कृत्यों का दुष्परिणाम भुगत रहे है। ओजोन मण्डल का विघटन हरित गृह प्रभाव, अम्लीय वर्षा का प्रभाव समुद्र तल का ऊँचा उठते तापमान में वृद्धि आदि ऐसी गम्भीर समस्याऐं है जिनके कारण वन्य जीव, मृदा कृषि उपजे तथा मानव स्वयं संकट ग्रस्त हो गया है।

परिस्थितिक असंतुलन जैव मण्डल के अस्तित्व के लिए खतरा बनता जा रहा है। जिसे आज हम विकास कहते है। वहीं संस्कृति एवं सभ्यता के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। अभी भी समय है कि हम इन दुष्परिणामों से सचेत होकर पर्यावरण गुणवत्ता के सुधार के लिए प्रयत्नशील हो जाये। जिसमें पर्यावरण शिक्षा सर्वाधिक उपयोगी है। जिसमें शिक्षक एक ऐसा सहारा है जिस पर पर्यावरण सुधार के लिए विश्वास किया जा सकता है।

अब वर्तमान में पर्यावरण को समझने तथा उसकी सभी बाधाओं को दूर कर उसे संतुलित एवं जन उपयोगी बनाने हेतु मनुष्य को अपने को लक्ष्य केन्द्रित तथा परिणाम केन्द्रित करना होगा और अन्तिम उपलब्धि पर्यावरण की गुणवत्ता रखनी होगी। इसी से मनुष्य को जीवन की गुणवत्ता प्राप्त होने की संभावना हो सकती है। हमें निम्न दिशाओं में अपने क्रियाकलाप करने होगें।

(1) पर्यावरण संरक्षण

प्रकृति में अथवा पृथ्वी पर मानवकृत पर्यावरण की स्थिति जो भी मानव के दोषपूर्ण कृत्यों के बाद रह गई है उसे संरक्षण प्रदान किया जाये। अपरिवर्तनीय संसाधनों को कम से कम छेड़ा जाय तथा परिवर्तनीय संसाधनों का आवश्यकतानुसार ही उपयोग हो। मनुष्य को धार्मिक मान्यताओं, सांस्कृतिक परम्पराओं और प्राचीन प्रथाओं/रिवाजों के माध्यम से सही कार्य करने हेतु प्रेरित किया जाना बहुत आवश्यक है। उन्हें यह बताना भी बहुत समीचीन है कि पर्यावरण संरक्षण से तुम्हारा तथा तुम्हारी भविष्य की पीढ़ी का जीवन अत्यन्त निकट से जुड़ा है।

(2) पर्यावरण सुरक्षा

संरक्षित की गई स्थिति की सुरक्षा तथा उसकी आवश्यकता देखभाल इस पद के अन्तर्गत आता है। पर्यावरण को हर स्थिति में विनाश से बचाना है तथा प्रकृति के विविध कार्यकलापों को अबाध गति से चलते रहने हेतु प्रयत्नशील रहना है। वस्तुओं का सदुपयोग भी सुरक्षा में सम्मिलित किया जा सकता है।

(3) प्रदूषण की रोकथाम

वायु, जल भूमि, वाहन तथा ध्वनि प्रदूषण आदि से जनमानस अत्यन्त ग्रस्त तथा त्रस्त है। वह उपाय करने हैं जिससे भविष्य में हर क्षेत्र के प्रदूषण को रोका जा सके। अवशिष्ट के निस्तारण की समस्या का हल भी खोजना अत्यन्त आवश्यक हो गया है क्योंकि अप्रत्यक्ष रूप से यह भी प्रदूषण ही फैला रहे हैं और विश्व भर में मानव की चिन्ता के कारण बन रहे हैं। प्रदूषण को रोकने हेतु राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर पर बनाये गये कानून की सख्ती से अनुपालन करनी और करानी चाहिए।

(4) अन्य समस्याओं का निराकरण

अनेक पर्यावरणीय समस्याएँ मूलरूप से एक या कुछ समस्याओं से जुड़ी हैं, अतः समाधान खोजने हेतु मूल समस्याओं के निराकरण की बात सोचना उचित एवं उपयुक्त है। पर्यावरणीय समस्याएँ स्वतः हल हो जायेंगी। उद्योगों में आवश्यक क्षमता के प्रदूषण नियंत्रक लगाने में वायुमण्डल और जलमण्डल की अनगिनत समस्याओं का समाधान निहित है आदि। यह दृष्टिकोण प्राकृतिक तथा मानवकृत दोनों प्रकार के पर्यावरण हेतु आवश्यक है।

(5) पर्यावरण सुधार

जितना भी पर्यावरण विकृत हो गया है अथवा उसका ह्रास हो रहा है, उसे सुधारने हेतु भी व्यावहारिक प्रयास किए जाने की महती आवश्यकता है। घने जंगल लगाये जायें, वन्य जीवों की सुरक्षा का प्रावधान हो, जल स्रोतों की स्वच्छता बनाई रखी जाये, माइनिंग (Mining) से विकृत स्थलों को मनोरंजन स्थल के रूप में विकसित किया जाये। आवासीय कॉलोनियों अथवा कस्बे व गाँव के बीच बन गये गन्दगी केन्द्र (Dumping grounds) को बच्चों के खेलने के मैदानों में परिवर्ति जिाये। स्वचलित वाहनों का उपयोग कम किया जाये। भूमि क्षरण को रोकने की पुख्ता व्यवस्था हो, खेतों में पारम्परिक कार्बनीय खादों के उपयोग को प्रोत्साहन दिया जाये आदि।

(6) पर्यावरण के प्रति जनजागृति

साधारण जन–मानस को पर्यावरण की विभिन्न समस्याओं से अवगत कराकर उनसे हो सकने वाले दुष्परिणामों की जानकारी दी जानी चाहिए। इन समस्याओं के निराकरण हेतु उनकी भूमिका के महत्त्व को भी समझाना चाहिए। स्वयं सेवी संस्थाओं के महत्त्वपूर्ण योगदान को समझने और समझाने की आवश्यकता है।

(7) पर्यावरणीय शिक्षा की आवश्यकता एवं औचित्य

विश्वव्यापी समस्या का समाधान केवल योजना निर्माण और उसकी क्रियान्वित से ही सम्भव नही है। इस हेतु व्यवस्थित रूप से पर्यावरण शिक्षा का प्रावधान प्रत्येक स्तर के लोगों के लिए करना चाहिए, चाहे वह विद्यार्थी हो अथवा कार्यरत कर्मचारी और अधिकारी, चाहे वह शिक्षित हो अथवा अशिक्षित। सभी लोगों के लिए आवश्यक सामग्री का चयन तथा उसे प्रदान करने का तरीका अत्यन्त व्यावहारिक बनाना चाहिए। शिक्षा ग्रहण करने वाले भी इस विषय की उपादेयता पहचान सकें यह भी जरूरी हैं।

(8) विदेशों में पर्यावरण संरक्षण हेतु अपनाये गये तरीकों की नवीनतम जानकारी

पर्यावरण की समस्या विश्वव्यापी है और अनेक देशों ने जिनमें इंग्लैण्ड, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, जर्मनी, स्वीडन, फिनलैण्ड, फ्रांस, डेनमार्क, जापान, कनाडा आदि शामिल हैं, इससे काफी सीमा तक छुटकारा पा लिया है। वे विश्व तापन (Global Warming), तेजाबी वर्षा (Acid Rains) और ओजोन पर्त का क्षय (Ozone Layer Depletion) आदि समस्याओं के समाधान हेतु विज्ञान तथा तकनवीकी ज्ञान का सहारा लेकर प्रयत्नशील है। ऐसे देशों की कार्य योजनाओं का अध्ययन हमें अपने लक्ष्य निर्धारण करने तथा उसकी क्रियान्वित में बहुत सहायक हो सकते है। संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रयासों और प्रसारित निर्देशों तथा सुझावों की जानकारी भी उपलब्ध करनी चाहिए।

(9) सरकार की नीति व कार्य विधि

वर्तमान की आवश्यकता को वरीयता देते हुए सरकार को पर्यावरण की नीति बनानी चाहिए तथा इस प्रकार की कार्य विधि अपनाई जानी चाहिए जिससे वांछनीय परिणाम प्राप्त हो सके। अपने अधीन समस्त अधिकारी/कर्मचारियों को ऐसे स्पष्ट निर्देश होने चाहिए जिससे पर्यावरण विकृति के किसी कार्य से वह समझौता न करें। केवल महत्त्वाकांक्षी योजना को निरूत्साहित कर व्यावहारिक कार्य पक्ष को प्रधानता देना आवश्यक है। विश्व स्तर पर सोचो, लेकिन स्थानीय परिपेक्ष्य में काम करों के सिद्धान्त का अनुसरण उचित एवं उपयुक्त है। राजनीति और आर्थिक पक्ष से इस क्षेत्र को बचाना चाहिए और मानव कल्याण तथा उनके सुखी जीवन की कल्पना की योजना का आधार बनाना चाहिए।

(10) लोगों की मानसिकता में परिवर्तन लाना

प्रत्येक व्यक्ति की यह सोचने की दिशा, कि अकेले मेरे असामान्य कार्य करने से क्या फर्क पड़ता है, को अब परिवर्तन की आवश्यकता है। सब मिलकर चाहे कोई अच्छा अथवा सही कार्य कर पाने में सफल न हो, लेकिन किसी एक व्यक्ति के अवांछनीय कृत्य से हाहाकार मच सकता है लोगों में अब ''बूँद–बूँद जल भरहिं तलावा'' की सोच को जगाना होगा। सभी लोग जो भी इस पृथ्वी पर रहते हैं उनका यह उत्तरदायित्व है कि वह इस पर्यावरण को शुद्ध, स्वच्छ व सन्तुलित रखें।

(11) पर्यावरणीय आचार संहिता का विकास करना

पर्यावरण की समस्या मानव द्वारा ही उत्पन्न हुई है, विशेषतः उनकी अधिक आबादी और उनके गलत क्रियाकलापों द्वारा। अतः कटु सत्य यही है कि इनका हल भी मनुष्य द्वारा ही किया जाना चाहिए यह उनका नैतिक दायित्व भी है और कर्त्तव्य भी। पर्यावरण आचार संहिता का निर्माण किया जाना चाहिए और उसका कठोरता से स्व–पालन करना चाहिए।

(12) पर्यावरण के क्षेत्र में प्रशिक्षित व्यक्तियों की आवश्यकता

पर्यावरण के क्षेत्र में हर स्तर पर, उच्च अधिकारी से लेकर निम्न कर्मचारी तक, प्रशिक्षित व्यक्तियों के उपलब्ध न हो पाने के कारण पर्यावरण सम्बन्धी योजनाओं की सफल क्रियान्वित नहीं हो पा रही है उचित प्रकार से क्रियान्वयन का मानीटरिंग भी आवश्यक है। पर्यावरण को अलग से एक कार्य समझ कर नही किया जाना चाहिए बल्कि इसे प्रत्येक विभाग के कार्यों से जोड़ना चाहिए, तभी एक सही प्रस्तुतीकरण सम्भव है।

(13) पर्यावरण दावों के लिए विशेष न्यायालय

पर्यावरण विकृत करने वाले व्यक्ति अथवा संस्थान को तत्काल विशेष न्यायालयों के माध्यम से पर्यावरणीय कानून के अन्तर्गत संजायें होनी चाहिए। इससे अन्य लोगों को भी अपने आपको सुधारने का अवसर मिलेगा।

(14) जनहित याचिकाओं को प्रोत्साहन

पर्यावरण के संकट से सताये गये व्यक्ति अकेले कोई कदम उठाने में असहय पाते हैं जिनके कई कारण है। न्यायालयों द्वारा अतः व्यक्ति समुदाय, संस्था अथवा अन्य किसी भी प्रकार से उठछाये गये प्रकरणों को जनहित याचिका मानकर स्वीकार कर उन्हें प्रोत्साहन देना चाहिए।

(15) नगर–नियोजन को महत्त्व

नगर नियोजन में आबादी के बहुत पास प्रदूषण फैलाने वले उद्योग न हों तथा हरित पट्टी (Green Belt) से नगर घिरा हो, यह तभी सम्भव है जबकि नगर नियोजन का महत्त्व दिया जाये जो अत्यन्त आवश्यक है। बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन, मनोरंजन स्थल, प्रोवीजन एवं अन्य स्टोर आदि कहाँ हो यह भी नगर नियोजन के अन्तर्गत लिया जा सकता है, जिसमें रहने वाले व्यक्ति पर्यावरणीय विपदाओं से अधिक से अधिक दूर रहें।

(16) अवशिष्टों का पुनः चक्रण

ऊपर हमने औद्योगिक, कृषि व अन्य अवशिष्टों के निस्तारण की बात कहीं हैं, लेकिन अनेक पदार्थ/वस्तुएँ ऐसी हैं, जिनका उपयोग के बाद पुनः चक्रण किया जा सकता है। इनमें कागज, प्लास्टिक, लोहे के स्क्रेप्स, शीशे के टुकड़े आदि प्रमुख है। कूड़ा–कचरा तो इन दिनों के रूप में चक्रित अनेक देशों में किया ही जा रहा है।

(17) पर्यावरण के क्षेत्र में शोध

विज्ञान और टेक्नोलॉजी की निरन्तर प्रगति ने पर्यावरण क्षेत्र को कई नई दिशाएं दी है तथा कई समस्याओं को हल करने की पेशकश भी की है जिन्हें इसलिए प्रयोग में नहीं लिया जा सका है क्योंकि वह मँहगी है। शोध के माध्यम से कम व्यय वाली तकनीकी का विकास किया जाना चाहिए।

(18) पर्यावरण साहित्य का निर्माण तथा उसका वितरण

ऐसे पर्यावरण साहित्य का निर्माण किया जाना अपेक्षित है, जो सरल, स्पष्ट, सही और लोगों को ग्राह्य हो। मूलभूत बिन्दुओं की स्पष्टता से ही पर्यावरण की आन्तरिक स्थिति का भान जनमानस को दिया जा सकता है। यह व्यवस्था भी साथ में आवश्यक है कि इस साहित्य का व्यापक वितरण और प्रसार हो।

(19) बढ़ती आबादी पर नियंत्रण

पर्यावरण ही नही बल्कि लगभग सभी समस्याओं के मूल में कारण बढ़ती आबादी है, जिस पर नियंत्रण करना बहुत कठिन हो रहा है। इसी वजह से प्राकृतिक संसाधनों का अधिक उपयोग, अन्य वस्तुओं की अधिक आवश्यकता, प्रदूषण में वृद्धि और अन्ततः पर्यावरण ह्रास हो रहा है। किसी भी प्रकार इसे नियन्त्रित करने से ही पर्यावरण समस्याओं की कमी हो सकती है।

(20) पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन की आवश्यकता

किसी भी नये उद्योग को प्रारम्भ करने से पूर्व उसका पर्यावरणीय

प्रभाव मूल्यांकन कराया जाना अत्यन्त आवश्यक कर देना चाहिए नही तो भविष्य में हो सकने वाली घटनाओं/दुर्घटनाओं से बचना/बचाना बहुत मुश्किल होगा।

निष्कर्ष

आज विश्व समुदाय पर्यावरण से सम्बन्धित अनेक समस्याओं से जुझ रहा है। संसाधनों में विक्षोभ, पर्यावरण में असन्तुलन का कारण पर्यावरणीय प्रदूषण है। पर्यावरणीय प्रदूषण के कारण सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन भी प्रभावित हुआ है। आज पर्यावरण अवनयन इतनी तीव्र गति से बढ़ रहा है कि अगर इस पर दृष्टि न डाली जाय तो भविष्य में मनुष्य ही नहीं वरन् समस्त जीवों का अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा। वर्तमान पर्यावरणीय संकट दिन–प्रतिदिन अपना पैर जमाता चला जा रहा है, जिससे अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। यथा प्रदूषण की समस्या, मूल्य अवनयन की समस्या, वनस्पतियों के नष्ट होने की समस्या, मानव अस्वस्थता बढ़ने की समस्या आदि।

अतः कहा जा सकता है कि पर्यावरण के प्रति अच्छे दृष्टिकोण विकसित करके पर्यावरणीय समस्याओं से बचा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. कुमार, विनीत (1982). *पर्यावरणीय प्रदूषण का अध्ययन,* वाराणसीः तारा बुक एजेन्सी।
2. दुबे, राजेश (2004). *पर्यावरण शिक्षा,* लखनऊः प्रकृति भारती प्रकाशन।
3. मलिक, जसवीर (2004). *पर्यावरण शिक्षा,* दिल्लीः मोहित प्रकाशन।
4. मिश्रा, ओ0पी0 (2002). *पर्यावरण विधि,* इलाहाबादः सेन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन।
5. रावत, ज्ञानेन्द्र (2006). *पर्यावरण एक विश्लेषणात्मक अध्ययन,* नई दिल्लीः यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन।
6. शर्मा, अवधेश (2006). *एन्वायर्नमेंटल इकानोमिक,* नई दिल्लीः श्री पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
7. शिवकुमार, जी.एस. (2011). एनवॉयरमेण्टल एटीट्यूड एमंग सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स. *इंडियन स्ट्रीम रिसर्च जर्नल,* 1(11), 1–4
8. सिंह, दिनेश (2002). *पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण,* इलाहाबादः ज्ञान भारती पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
9. सिंह, सविन्द्र (2005). *पर्यावरण भूगोल,* गोरखपुरः वसुन्धरा प्रकाशन।